Date : 4 अप्रैल 2023

असोला भाटी अभ्यारण्य

संदर्भ- हाल ही में असोला भाटी अभ्यारण्य में पौंधों की एक बीज बैंक का निर्माण किया जा रहा है। वन विभाग और बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (बीएनएचएस) द्वारा संयुक्त रूप से बीज परियोजना कार्यान्वित की जा रही है, जिसका उद्देश्य शहर में अनुप्लब्ध प्रजातियों को वापस लाना है, जैसे – कीकर।

बीज बैंक –

भारत में छोटे व सीमान्त किसानों के लिए सीमांत बीज बैंक, टिकाउ खेती के कई उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। ये बीज बैंक, किसान समुदाय की सहायता से खेतों पर स्थानीय व आनुवांशिक विविधता को बनाए रखने में मुख्य केंद्र के तौर पर कार्य करते हैं। ये सामुदायिक बीज बैंक प्राचीन काल से ही बिना लागत के या बहुत कम लागत में गांवों में प्रचलित एक **अनौपचारिक** बीज वितरण प्रणाली के गठन द्वारा एक स्थानीय किसानों की सेवा करते रहे हैं। यह परियोजना, वन विभाग और बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (बीएनएचएस) द्वारा स्थानीय प्रजातियों के बीजों के संरक्षण के लिए एक प्रयास है। बीज और पौधे दिल्ली, **राजस्थान**, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, बिहार और हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों से लिए गए हैं।

बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (बीएनएचएस)

- बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (बीएनएचएस), एक अखिल भारतीय वन्यजीव अनुसंधान संगठन है।
- इसका गठन 8 प्रकृति प्रेमियों के द्वारा किया गया। इसके गठनकर्ताओं में दो भारतीय भी शामिल थे। जो हैं- डॉ. डी. मैकडोनल्ड, ई. एच. एटकेन, कर्नल सी स्विन्हो, जे. सी. **एण्डर**सन, जे. जॉनसन, आत्माराम पाण्डुरंग, जी. ए. मैकोनोची और सखाराम अर्जुन।
- यह संगठन 1883 से प्रकृति संरक्षण के कारण को बढ़ावा दे रहा है।
- बीएनएचएस मिशन: अनुसंधान, शिक्षा और जन जागरूकता के आधार पर कार्रवाई के माध्यम से प्रकृति का संरक्षण करना।
- मुख्य रूप से जैविक विविधता बीएनएचएस विजन: एक व्यापक आधार वाले निर्वाचन क्षेत्र के साथ **प्रमुख** स्वतंत्र वैज्ञानिक संगठन बनाना और संकटग्रस्त प्रजातियों और आवासों के संरक्षण हेतु प्रयास करना।
- जैव विविधता के संरक्षण हेतु कुडनकुलम के विशेष समुद्र तटों पर मैंग्रोव वनों की स्थापना हेतु बीएनएचएस ने 2017-18 में एक परियोजना की शुरुआत की थी।

असोला भाटी अभ्यारण्य-

- **असोला भाटी अभ्यारण्य अरावली की पहाड़ियों** में स्थित है, जो क्वार्टजाइट और रेत से बनी है।
- क्वार्टजाइट और रेत के खनन ने इस क्षेत्र को खराब स्थिति में छोड़ दिया है। 1991 में इस क्षेत्र में खनन पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।
- 1989 और 1991 में सहरपुर गाँव, मैदानगढ़ी, असोला और भट्टी गाँव की ग्राम सभा भूमि को असोला **भट्टी** वन्यजीव अभयारण्य के रूप में अधिसूचित किया गया था।

- असोला भाटी वन्य जीव अभ्यारण्य दिल्ली हरियाणा सीमा पर **अरावली पहाड़ी श्रृंखला** को कवर करता है। अरावली पहाड़ी श्रृंखला, वर्षों से दुनियां के सबसे विशिष्ट प्रजातियों की शरणस्थली बना हुआ है।
- इस अभ्यारण्य में वन्य व जीव दोनों प्रकार की प्रजातियों की विविधता पाई जाती है।
- यहां पक्षियों की लगभग 250 प्रजातियाँ व 2 उपप्रजातियां पाई गई हैं। और पौंधों की लगभग 100 प्रजातियां उपलब्ध हैं।
- यह अभ्यारण्य दिल्ली, फरीदाबाद व गुरुग्राम के लिए जल पुनर्भरण क्षेत्र की तरह कार्य करता है।
- अभ्यारण्य में अग्रणी व आक्रामक दोनों प्रकार की प्रजातियां पाई जाती हैं।

आक्रामक प्रजातियाँ- आक्रामक प्रजातियाँ, अन्य प्रजातियों पर आक्रमण कर उनके आवास को हानि पहुँचा सकती है। यह स्थानीय प्रजातियों को कम करने तथा पारिस्थितिकी तंत्र में परिवर्तन करने में सक्षम होती हैं।जैसे- सलाई(बोसवेलिया सराटा) और फालसा(ग्रेविया एशियाटिक)। ब्रिटिश काल में दिल्ली की बंजर भूमि को आबाद करने के लिए कीकर जैसी आक्रामक प्रजातियों को स्थापित किया गया था। आक्रामक प्रजातियों के कारण स्थानीय प्रजातियों से संबंधित उद्योग नष्ट हो सकते हैं। आक्रामक प्रजातियों का प्रबंधन निम्न प्रकार किया जा सकता है-

- रोकथाम – आक्रामक प्रजातियों के प्रवेश की प्रक्रिया को समझना। और उसकी रोकथाम करना।
- निगरानी – प्रजातियों की आक्रमण प्रक्रिया का पता लगाकर आक्रमण होने से पूर्व आक्रमण प्रक्रिया में तेजी से कार्य किया जाए। इस प्रक्रिया के लिए संसाधन, योजना व समन्वय की आवश्यकता होती है।
- नियंत्रण – रोकथाम व निगरानी करने के बाद आक्रामक प्रजातियों पर नियंत्रण पाना आसान हो जाता है। इससे स्थानीय प्रजातियों की पुनर्प्राप्ति आसान हो जाती है।
- बहाली – यदि किसी आक्रामक प्रजाति द्वारा आक्रामक स्थितियों को रोकना संभव नहीं है तो उसके लिए पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करना आवश्यक हो जाता है।

अरावली पर्वतमाला- असोला भाटी परियोजना, अरावली की पहाड़ियों के लिए प्रारंभ की गई है।

- अरावली पर्वतमाला, विश्व की सबसे प्राचीन पर्वतमालाओं में से एक है। इसकी आयु 570 मिलियन वर्ष मानी जाती है।
- राजस्थान के पूर्वोत्तर से प्रारंभ होकर दिल्ली के दक्षिणी हिस्से तक 560 किमी की पर्वतमाला बनाती है।
- अरावली का सर्वोच्च पर्वत शिखर, गुरुशिखर(1722 मीटर) राजस्थान के सिरोही जिले में स्थित है।
- यह पर्वत श्रेणी क्वार्ट्ज चट्टानों से निर्मित है। दक्षिणी क्षेत्रों में यह सघन वनों से मिलकर बना है।
- इनमें तांबा, सीसा व जस्ता आदि खनिज पाए जाते हैं।
- इन पहाड़ियों पर 186 से अधिक वृक्षों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इन वृक्षों के कारण अरावली पर्वतमाला सुरक्षित है।

बीज बैंक के लाभ-

- अरावली पर्वतमाला विभिन्न प्रकार की पेड़, पौंधों व झाड़ियों की प्रजाति के लिए प्रसिद्ध है इसलिए इन प्रजातियों को बचाने के लिए इन बीजों को एकत्रित किया जा रहा है।
- बीजों बैंक की स्थापना से प्रजातियों का संरक्षण व संवर्धन किया जा सकता है। तथा इनसे जुड़ी पारिस्थितिकी को बचाया जा सकता है।
- वृक्षारोपण के माध्यम से पर्यावरण में भागीदारी के लिए नर्सरी तैयार की जाएगी। जिससे विभिन्न प्रकार के पौंधों की प्रजातियों का अन्य स्थानों पर प्रसार संभव हो सकेगा।

स्रोत

Indian Express
indian express
Reefresilience.org
www.bnhs.org

Gunjan Joshi

कार्बन मूल्य निर्धारण

संदर्भ- हाल के कुछ वर्षों से देश के विकास के लिए पर्यावरण को मूल्य चुकाना पड़ा है जिसका परिणाम निर्बाध कार्बन उत्सर्जन के रूप में हुआ है। कुछ वर्षों से कार्बन उत्सर्जन में कमी को लेकर देश आगे आ रहे हैं। जी 20 सम्मेलन में भारत(अध्यक्ष) से अपेक्षा की जा रही है कि इसका हल कार्बन मूल्य निर्धारण के रूप में किया जाएगा।

कार्बन मूल्य निर्धारण-

- कार्बन मूल्य निर्धारण किसी उद्योग या देश के कुल कार्बन उत्सर्जन से पर्यावरण में हुए नुकसान की भरपाई के लिए निर्धारित बाह्य लागत है। बाह्य लागत वह लागत है जिसे जनता अन्य तरीकों से भुगतान करती है।
- कार्बन की कीमत नुकसान के बोझ को उन लोगों या देशों पर वापस लाने में मदद करती है जो इसके लिए जिम्मेदार हैं, और जो इसे कम कर सकते हैं।
- यदि कम्पनियाँ सीमित मात्रा से अधिक कार्बन का उत्सर्जन करती है, तो उन्हें या तो आधिकारिक नीलामी के माध्यम से या कम उत्सर्जन करने वाली कम्पनियों से अतिरिक्त परमिट खरीदना पड़ता है। यह कैप एंड ट्रेड में व्यापार बनाता है।
- 2015 के पेरिस समझौते के बाद विकासशील देशों ने उत्सर्जन में कमी का लक्ष्य निर्धारित किया।
- अब तक कार्बन उत्सर्जन मूल्य निर्धारण के तीन तरीके हैं –
  1. कोरिया और सिंगापुर की तरह घरेलू स्तर पर कार्बन टैक्स की स्थापना।
  2. यूरोपीय युनियन व चीन की तरह उत्सर्जन व्यापार प्रणाली का प्रयोग
  3. और यूरोपीय युनियन द्वारा प्रस्तावित कार्बन सामग्री पर आयात शुल्क लगाना।

वैश्विक प्रयास

- विश्व के 46 देश कार्बन उत्सर्जन के लिए मुआवजा देते हैं, जबकि यह देश कुल कार्बन उत्सर्जन में केवल 30% का योगदान दे रहे हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और भारत के लिए क्रमशः $75, $50, और $25 प्रति टन कार्बन की न्यूनतम कीमत प्रस्तावित की है। इसका मानना है कि इससे 2030 तक वैश्विक उत्सर्जन में 23% की कमी लाने में मदद मिल सकती है।
- कार्बन मूल्य निर्धारण अप्रत्यक्ष रूप से नवीकरणीय संसाधनों जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा पर अधिक ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित करता है। इन संसाधनो के लिए भारत अत्यधिक अनुकूल प्रतीत होता है।

भारत में कार्बन मूल्य निर्धारण

- मूल्य निर्धारण के तीन तरीकों में से, भारत को कार्बन टैक्स आकर्षक लग सकता है क्योंकि यह जीवाश्म ईंधन को सीधे तौर पर हतोत्साहित कर स्वच्छ ऊर्जा युक्त संसाधनों को प्रोत्साहित कर सकता है। क्योंकि भारत में सौर ऊर्जा व पवन ऊर्जा में निवेश कर उचित राजस्व अर्जित किया जा सकता है।(Cop 26 के दौरान भारत ने 2070 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य रखा है।
- भारत में स्वच्छ ऊर्जा के प्रयोग से पेट्रोलियम करों की अधिक अक्षम योजना को प्रतिस्थापित किया जा सकता है जो सीधे उत्सर्जन के उद्देश्य से नहीं हैं।
- गैसोलीन यानि पैट्रोलियम की कीमतों (करों और सब्सिडी सहित) के आधार पर सऊदी अरब और रूस निचले सिरे पर हैं, मध्य श्रेणी में चीन और भारत, और उच्च श्रेणी में जर्मनी और फ्रांस हैं।
- भारत सहित अधिकांश देशों की राजकोषीय नीति ने कार्बन टैक्स को लागू करने के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे को निर्धारित किया है। उदाहरण के लिए, उन्हें सड़क-ईंधन करों के रूप में वसूल किया जा सकता है, जो अधिकांश स्थानों पर स्थापित हैं, और उद्योग और कृषि तक विस्तारित हैं। नीति निर्माताओं को कर की दर चुननी होती है, जो जापान के $2 से व्यापक रूप से भिन्न होती है।
- भारत में कार्बन बाज़ार स्थापित करने और कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग योजना को निर्दिष्ट करने के लिए सरकार ने ऊर्जा संरक्षण बिल 2001 मं संशोधन किया है।

आगे की राह-

अकेले चीन, अमेरिका, भारत, रूस और जापान में पर्याप्त उच्च कार्बन टैक्स, पूरक कार्यों के साथ, वैश्विक प्रदूषण और वार्मिंग पर एक उल्लेखनीय प्रभाव डाल सकता है। यह डीकार्बोनाइजेशन को एक विजयी विकास सूत्र के रूप में देखने का मार्ग भी प्रशस्त कर सकता है।

कार्बन उत्सर्जक देशों को पर्यावरण को प्राथमिकता देते हुए नीतियाँ बनानी होंगी जिससे पर्यावरण का कम से कम नुकसान हो।

स्रोत

द हिंदू

Gunjan Joshi